RRB ALP & TECHNICIAN 2024 & झारखण्ड पुलिस भर्ती

Pilot Batch (CBT- 1&2)

सेवक बैच

HISTORY

जैन धर्म

LIVE 14-02-2024 09:00 AM

प्रमुख बौद्ध संगितियाँ : (सम्मेलन)

अध्यक्ष

- प्रथम बौद्ध संगिति :- 483 ईसा पूर्व :- R → राजग्रह — A → अजातशत्रु — महाकस्यप
- द्वितीय बौद्ध संगिति : 383 ईसा पूर्व :- V → वैशाली — K → कालाशोक — साबाकमीर
- तृतीय बौद्ध संगिति :- 250 ईसा पूर्व :- P → पाटलिपुत्र — A → अशोक — मोग्गलिपुत्ततिस्स
- चतुर्थ बौद्ध संगिति : 1 ई० (प्रथम शताब्दी) K → कुण्डलवन (कश्मीर) — K → कनिष्क —
  - अध्यक्ष → वसुमित्र
  - उपाध्यक्ष → अश्वघोष

⇒ चौथी बौद्ध संगिति :
- हीनयान
- महायान

⇒ पांचवी बौद्ध संगिति : 7वी शताब्दी :- कन्नौज (उ॰प्र॰) — हर्षवर्धन —

⇒ महायान मत की श्रेष्ठता सिद्ध हुई।

त्रिपिटक :→ गौतम बुद्ध के उपदेशों का संग्रह

1. विनय पिटक :- संघ सम्बन्धी नियम तथा आचरण की शिक्षा
2. सुत्त पिटक :- धार्मिक सिद्धांत
3. अभिधम्म पिटक :- दार्शनिक सिद्धांत

बौद्ध धर्म के राजकीय संरक्षण :

⇒ बिम्बिसार / अजातशत्रु :- हर्यक वंश के राजा (मगध)

⇒ प्रसेनजीत → कोशल नरेश

⇒ उदयन :- वत्स नरेश

→ चण्ड प्रद्योत → अवन्ति के राजा

⇒ अशोक – मौर्यवंशीय राजा

⇒ कनिष्क :- कुषाण वंश

जैन धर्म :

⇒ जैन शब्द संस्कृत भाषा के जिन शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है — विजेता

→ जैन महात्माओं को निर्ग्रन्थ (बन्धन रहित) तथा जैन श्रेष्ठताओं को तीर्थंकर कहा गया है

⇒ तीर्थंकर :- 24

⇒ प्रथम तीर्थंकर :- ऋषभदेव (संस्थापक)

⇒ अन्य नाम → आदिनाथ

⇒ जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर :- पार्श्वनाथ

जन्म :- महावीर स्वामी के जन्म के 250 वर्ष पूर्व वाराणसी में

पिता का नाम :- अश्वसेन (काशी के नरेश)

माता का नाम :- वामादेवी (कौशल नरेश नरवर्मन की पुत्री)

⇒ पत्नी :- प्रभावती

⇒ प्रतीक चिन्ह :- साँप

⇒ निर्वाण :- सम्मेद शिखर

पाँच महाव्रत :

1. सत्य : सदा सत्य तथा मधुर बोलना
2. अहिंसा : जीव की हिंसा न करना
3. अपरिग्रह : सम्पत्ति ग्रहण न करना
4. अस्तेय : चोरी न करना

(1–4) → पार्श्वनाथ

5. ब्रह्मचर्य : इन्द्रिय निग्रह करना → महावीर स्वामी ने जोड़ा

त्रिरत्न : मोक्ष :- कैवल्य की प्राप्ति हेतु

① सम्यक् ज्ञान → वास्तविक ज्ञान

② सम्यक् दर्शन : सत्य में विश्वास

③ सम्यक् आचरण : इन्द्रिय व कर्मों पर पूर्ण नियन्त्रण

⇒ जैन धर्म में अहिंसा पर विशेष बल दिया गया है

⇒ जैन धर्म पुनर्जन्म व कर्मवाद पर विश्वास करता है।

⇒